: विषयानुक्रमणिका :

प्राक्कथन : पृ० १ से ९

अध्याय :१ : सौंदर्यशास्त्र की परिभाषा- क्षेत्र विस्तार तथा विकास पृ० १ से ४१

सौंदर्यशास्त्र का अर्थ- परिभाषा- क्षेत्र-विस्तार- काव्यशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र का अंतर-भारतीय काव्यशास्त्र का विकास- पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र का विकास- सौंदर्यानुभूति और रसानुभूति का अन्तर ।

अध्याय :२ : सौन्दर्यशास्त्र के प्रमुख तत्व - पृ० ४२ से ९२

सौन्दर्य :
व्युत्पत्ति- अर्थ- परिभाषा-भारतीय तथा पश्चिमी स्वरूप-वस्तुवादी-आत्मवादी-समन्वयवादी दृष्टि-कोण- पश्चिमी तथा भारतीय विद्वानों के वर्गीकरण ।

कल्पना :
अर्थ- स्वरूप-परिभाषा-कल्पना और फैंसी में अन्तर-पश्चिमी तथा भारतीय विद्वानों के वर्गीकरण।

बिंब :
अर्थ- स्वरूप-परिभाषा-बिंब और रूपक-बिंब और मिथक में अन्तर-पश्चिमी तथा भारतीय विद्वानों के वर्गीकरण ।

प्रतीक :

अर्थ-स्वरूप-परिभाषा-प्रतीक और रूपक- प्रतीक और बिंब -प्रतीक और मिथक-प्रतीक और संकेत में अन्तर -पश्चिमी तथा भारतीय विद्वानों के वर्गीकरण ।

मिथक :

अर्थ-स्वरूप-परिभाषा-मिथक और निजंधरी कथा-मिथक और धर्मगाथा-मिथक और लोककथा में अन्तर-पश्चिमी तथा भारतीय विद्वानों के वर्गीकरण ।

अध्याय :३ : प्रसाद का जीवन-व्यक्तित्व और कृतियों का संक्षिप्त परिचय - पृ० ९३ से १४२

जन्म-बाल्यकाल-शिक्षा-उत्तरदायित्व-मित्रगोष्ठी-दिनचर्या-व्यक्तित्व-शारीरिक गठन तथा वेशभूषा-कुशाग्र बुद्धि- स्वभाव- रूचि एवं व्यसन-धर्म में आस्था-निस्वार्थ साहित्य सेवा- मृत्यु ।

कृतियों का परिचय-चित्राधार-कानन-कुसुम-प्रेमपथिक-करूणालय-महाराणा का महत्व-झरना-आँसू - लहर- कामायनी ।

अध्याय:४ : प्रसाद काव्य में सौन्दर्य विधान - पृ० १४३ से २१५

सौंदर्य सम्बंधी अवधारणा-सौंदर्य के विविध रूप-मानवीय सौंदर्य- नारी सौंदर्य-पुरूष सौंदर्य-बाल सौंदर्य-प्रकृति सौंदर्य-वस्तुगत सौंदर्य-कलागत सौंदर्य-भाषा-शब्दशक्तियाँ-छंद-अलंकार-निष्कर्ष ।

पृ०२१६ से २६२

अध्याय :५ : प्रसाद काव्य में कल्पना विधान -

क्रिया दृष्टि से कल्पना के भेद-पुनर्निमायक कल्पना, रचनात्मक कल्पना- पुनर्निमायक कल्पना के भेद - स्मृति-निर्भर कल्पना- स्मृत्याभास निर्भर कल्पना - प्रत्याभिज्ञाश्रित कल्पना-रचनात्मक कल्पना के भेद- विभाव विधायक कल्पना- तद्रूप कल्पना- अनुमानाश्रित कल्पना- सृजनात्मक कल्पना-मुक्तयादृच्छिकी कल्पना-व्यापार दृष्टि से कल्पना के भेद-उत्पादक कल्पना, परिवर्तक कल्पना, आच्छादक कल्पना- उत्पादक कल्पना के भेद-सावयव कल्पना-तिर्यक् - कल्पना-सादृश्य-निर्भर कल्पना-उदात्त कल्पना- विभावनशील कल्पना-मानवीकरण-निर्भर कल्पना- अभिव्यक्ति के आधार पर कल्पना के भेद- प्रकृति सम्बंधी कल्पना, प्रेम और सौंदर्य सम्बन्धी कल्पना, वायवी कल्पना,कलापक्ष से सम्बंधित - कल्पना ।

पृ०२६४ से ३००

अध्याय :६ : प्रसाद काव्य में बिंब विधान -

ऐन्द्रिय आधार पर बिंब के भेद-चाक्षुष बिंब- श्रावण बिंब-स्पर्श बिंब-घ्राण बिंब-रसना बिम्ब- मौलिक बिंब विधान की दृष्टि से बिंब के भेद - शब्द बिंब-वर्ण बिंब-समानुभूतिक बिंब-व्यंजनाप्रवण सामासिक बिंब- प्रसृत बिंब- अन्य आधारों पर बिंब के भेद- सज्ज्ञात्मक बिंब- उदात्त बिंब-संवेदनात्मक बिंब-वस्तुप्रधान बिंब-घनात्मक बिंब-विस्तार प्रधान बिंब-नाद प्रधान बिंब ।

अध्याय :७ : पृ०३०१ से ३३१

प्रसाद काव्य में प्रतीक विधान -

स्वरूप की दृष्टि से प्रतीक के भेद- अमूर्त प्रस्तुत के लिए मूर्त प्रतीक- मूर्त प्रस्तुत के लिए मूर्त प्रतीक- अमूर्त प्रस्तुत के लिए अमूर्त प्रतीक- मूर्त प्रस्तुत के लिए अमूर्त प्रतीक- अन्य आधारों पर प्रतीक के भेद-सार्वभौम प्रतीक- देशगत प्रतीक-परम्परागत प्रतीक-व्यक्तिगत प्रतीक या नवीन प्रतीक-युगीन प्रतीक-भावात्मक प्रतीक- प्रयोग की दृष्टि से प्रतीक के भेद-व्यंजनागर्भ प्रतीक - लाक्षणिक प्रतीक-प्रतीयमान के आधार पर प्रतीक के भेद- रूपात्मक प्रतीक, गुण-भाव-स्वभावात्मक प्रतीक- क्रियात्मक प्रतीक, मिश्र प्रतीक-रूपात्मक प्रतीक के भेद- आकृतिमूलक प्रतीक-परिवेशमूलक प्रतीक-वर्णमूलक प्रतीक ।

अध्याय :८ : पृ०३३२ से ३६१

प्रसाद काव्य में मिथक योजना -

प्रस्तावना-प्रसाद काव्य में प्रयुक्त मिथक-प्रलय-देवसंस्कृति- देवासुर संग्राम-त्रिपुर संहार-मिथकीय पात्र-मनु-श्रद्धा-इड़ा- उर्वशी और पुरुरवा-करुणालय की कथा का मिथकीय विधान ।

अध्याय :९ : पृ०३६२ से ३७३

उपसंहार -

महत्व और उपादेयता

सहायक ग्रंथों की सूची

पृ०१ से ४